" श्रीरामचरितमानस "

दो॰ सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास॥ 212

अर्थ : पुष्पवाटिका (फुलवारी), बाग और वन, जिनमें बहुत से पक्षियों का निवास है, फूलते, फलते और सुंदर पत्तों से लदे हुए नगर के चारों ओर सुशोभित हैं।

धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति।
सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति॥ 213

अर्थ : उज्ज्वल महलों में अनेक प्रकार के सुंदर रीति से बने हुए मणिजटित सोने की जरीक परदे लगे हैं। सीताजी के रहने के सुंदर महल की शोभा का वर्णन किया ही कैसे जा सकता है॥

सेन सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ग्याति।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति॥ 214

अर्थ : तब उन्होंने पवित्र हृदयके (ईमानदार, स्वामिभक्त) मंत्री, बहुत से योद्धा, श्रेष्ठ ब्राह्मण, गुरु (शतानन्दजी) और अपनी जाति के श्रेष्ठ लोगों को साथ लिया और इस प्रकार प्रसन्नता के साथ राजा मुनियों के स्वामी विश्वामित्र जी से मिलने चले।

प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि बिबेकु धरि धीर।
बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर॥ 215

प्रकाश कुमार

अर्थ : मन को प्रेम में मग्न जान राजा जनक ने

विवेक का आश्रय लेकर धीरज धारण किया और मुनि के चरणों में सिर नवाकर गद्‌गद (प्रेमभरी) गम्भीर वाणी से कहा – ॥

रामु लखनु दोउ बंधुबर रूप सील बल धाम।
मख राखेउ सबु साखि जगु जिते असुर संग्राम॥216

अर्थ : ये राम और लक्ष्मण श्रेष्ठ दोनों भाई रूप, शील और बल के धाम हैं। सारा जगत (इस बात का) साक्षी है कि इन्होंने युद्ध में असुरों को जीतकर मेरे यज्ञ की रक्षा की है॥

रिषय संग रघुबंस मनि करि भोजनु बिश्रामु।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु॥217

अर्थ : रघुकुल के शिरोमणि प्रभु श्रीरामचन्द्र जी ऋषियों के साथ भोजन और विश्राम करके भाई लक्ष्मण समेत बैठे। उस पहर भर दिन रह गया था॥

आइ देखि आवहु नगरु सुख निधान दोउ भाइ।
करहु सुफल सबके नयन सुंदर बदन देखाइ॥218

अर्थ : सुख के निधान दोनों भाई आकर नगर देख आओ। अपने सुंदर मुख दिखलाकर सब (नगर-निवासियों) के नेत्रों को सफल करो॥

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी-विभाग
डॉ. एल.के.व्ही.डी.
कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार